जादू का घोड़ा

इदरीस शाह, चित्र: जूली फ्रीमैन



जादू का घोड़ा

इदरीस शाह, चित्र: जूली फ्रीमैन



जादू का घोड़ा इदरीस शाह द्वारा एकत्र की गई सैकड़ों कहानियों में से एक है.

सूफी परंपरा में बच्चों की कहानियां, मनोरंजन और सीख के बीच एक पुल का काम करती हैं. कहानियां बच्चों को कठिन परिस्थितियों से निपटने में मदद कर सकती हैं और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकती हैं. साथ ही, वो वयस्कों में गहरी समझ को प्रोत्साहित कर सकती हैं.

मौखिक और लिखित कहानियों के माध्यम से, हम और हमारे बच्चे अब अधिक लचीले होने की क्षमता विकसित कर सकते हैं. वे अपने बारे में और जीवन के बारे में बहुत सी चीजों को समझना सीख सकते हैं.

जादू का घोड़ा

इदरीस शाह



बहुत समय पहले की बात है - एक देश था जहाँ लोग बहुत समृद्ध थे. उन्होंने पौधों को उगाने, फलों की कटाई और संरक्षण में, अन्य देशों में बिक्री के लिए वस्तुओं को बनाने में, और कई अन्य व्यावहारिक कलाओं में अग्रणी खोज की थी.



उनका शासक बहुत ही काबिल और संवेदनशील था, और वो नई खोजों और गतिविधियों को प्रोत्साहित करता था, क्योंकि उसे पता था कि नई खोजें उसके लोगों की मदद करेंगी.



उसके दो बेटे थे, तंबल और होशियार. होशियार अजीबोगरीब उपकरणों के इस्तेमाल में माहिर था. तंबल एक स्वप्नद्रष्टा था जो केवल उन चीजों में रुचि रखता था जो लोगों की निगाहों में बहुत कम मूल्य की थीं.



समय-समय पर राजा, जिसका नाम राजा मुमकिन था इस प्रकार की घोषणा करता था:

"जिन लोगों के पास दिलचस्प और उपयोगी उपकरण हों वो उन्हें परीक्षण के लिए महल में पेश करें ताकि उन्हें पुरस्कृत किया जा सके."

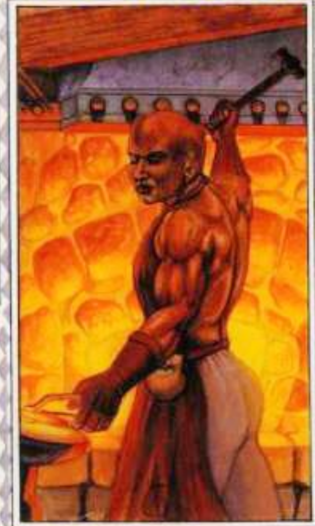




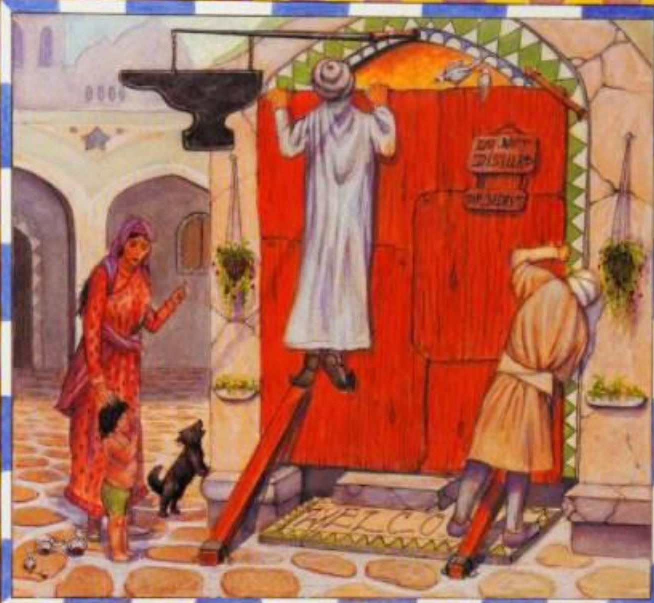
अब उस देश में दो आदमी थे, एक लोहार और एक लकड़ी का काम करने वाला बढ़ई, जो वैसे तो एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी थे, लेकिन दोनों अजीबोगरीब उपकरण बनाने में माहिर थे. जब उन्होंने इस घोषणा को सुना, तो वे पुरस्कार जीतने के लिए प्रतिस्पर्धा करने को तैयार हो गए ताकि उनकी योग्यताओं की भी निष्पक्ष परख हो जाए और राजा द्वारा उन्हें सार्वजनिक रूप से मान्यता भी मिले.











लोहार ने कई प्रतिभाशाली विशेषज्ञों की मदद से एक शक्तिशाली इंजन पर दिन-रात काम किया. उसने अपने काम को गुप्त रखने के लिए अपनी वर्कशॉप को ऊंची दीवारों से घेरा.

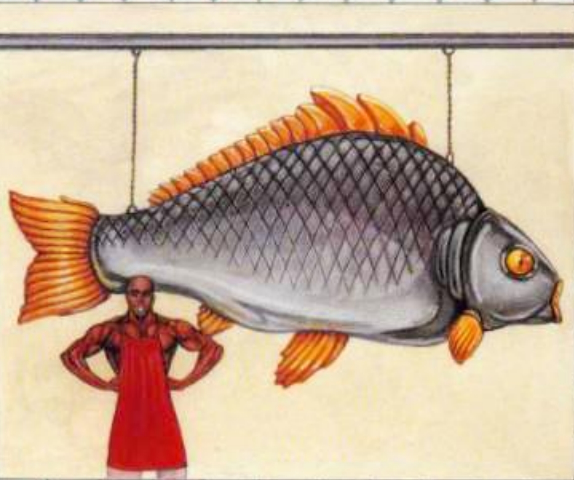


लकड़ी का काम करने वाला बढ़ई अपने साधारण औज़ार लेकर एक जंगल में चला गया, जहाँ लंबे, एकान्त चिंतन के बाद, उसने अपनी उत्कृष्ट कृति तैयार की.

प्रतिद्वंद्विता की खबर सब ओर फैल गई. लोगों ने सोचा कि लोहार आसानी से जीत जाएगा, क्योंकि उसके बढ़िया काम को लोगों ने पहले भी देखा था. दूसरी ओर बढ़ई के बनी चीज़ों की प्रशंसा की गई, लेकिन वे बहुत उपयोगी नहीं पाई गईं.

जब दोनों कलाकार तैयार हुए तो राजा ने दरबार में उनका स्वागत किया.





लोहार ने एक विशाल धातु की मछली बनाई जो उसके अनुसार, पानी के ऊपर और पानी के नीचे भी तैर सकती थी. वो ज़मीन पर सामन ढो सकती थी, जमीन में दब सकती थी, और यहां तक कि हवा में भी धीरे-धीरे उड़ भी सकती थी. पहले तो अदालत के लिए यह विश्वास करना मुश्किल हुआ कि किसी मनुष्य द्वारा बनाई कोई चीज़ ऐसा चमत्कार कर सकती थी. लेकिन जब लोहार और उसके सहायकों ने उसका प्रदर्शन किया, तो राजा बहुत खुश हुआ. राजा ने लोहार को एक महान सम्मान, एक विशेष पद और "समुदाय के हितैषी" होने की उपाधि दी.

प्रिंस होशियार को और अधिक चमत्कारिक मछलियाँ बनाने और उन्हें सभी के लिए उपलब्ध कराने का भार सौंपा गया.

लोगों ने लोहार और होशियार को आशीर्वाद दिया, साथ ही उस दयालु और बुद्धिमान राजा को भी आशीर्वाद दिया जिससे वे बहुत प्यार करते थे.

अपने उत्साह में, लोग विनम्र बढ़ई के बारे में सब कुछ भूल गए. फिर एक दिन किसी ने कहा, "लेकिन प्रतियोगिता का क्या हुआ? बढ़ई का अविष्कार कहां है? हम सभी उसे भी एक चतुर कारीगर के रूप में जानते हैं. शायद उसने भी कुछ उपयोगी बनाया हो."

"उन मछलियों से ज़्यादा उपयोगी और क्या हो सकता है?" होशियार ने पूछा. बहुत से लोग उससे सहमत थे.



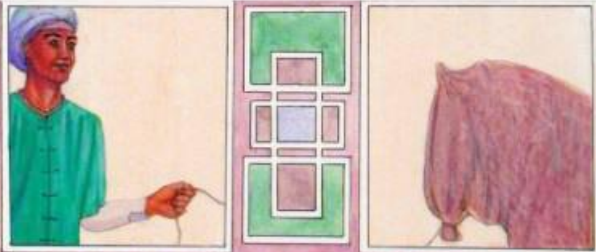
लेकिन एक दिन राजा भी ऊब गया. वो मछलियों और उनके चमत्कारों की रिपोर्ट से थक गया. उसने कहा, "अच्छा उस बढ़ई को बुलाओ, क्योंकि अब मैं यह देखना चाहता हूं कि उसने क्या बनाया है."

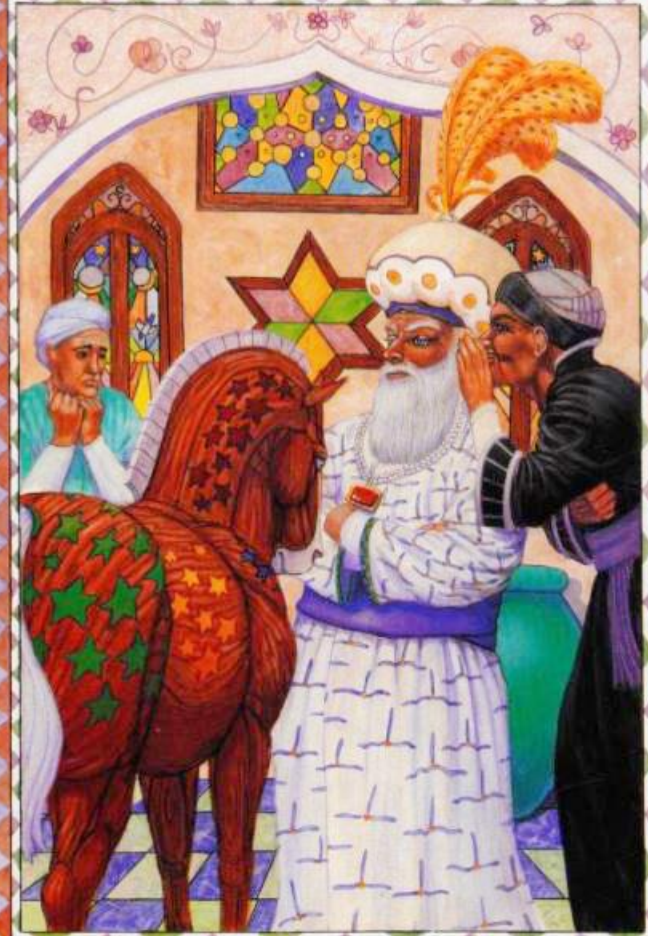
साधारण बढ़ई मोटे कपड़े में लिपटा एक पार्सल लेकर दरबार में हाज़िर हुआ. जैसे ही पूरा दरबार उसकी कृति देखने के लिए आगे बढ़ा, बढ़ई ने कवर को हटा दिया. उसने एक लकड़ी का घोड़ा बड़ी खूबसूरती से उकेरा था और उसे रंगीन पेंट से सजाया था. लेकिन राजा ने उसे देखकर कहा: "यह तो केवल एक खिलौना है!"

"लेकिन पिताजी," प्रिंस तंबल ने कहा, "आइए हम उस बढ़ई से ही पूछें कि उसने वो क्यों बनाया है."

"बहुत अच्छा," राजा ने कहा. "यह किस लिए है?"

"महामहिम," बढ़ई ने हकलाते हुए कहा, "यह एक जादुई घोड़ा है. यह प्रभावशाली नहीं दिखता है, लेकिन इसकी अपनी आंतरिक इंद्रियां हैं. मछली के विपरीत, जिसे आर्डर देना पड़ता है, यह घोड़ा खुद सवार की इच्छाओं को समझ सकता है और सवार जहां भी जाना चाहे उसे वहां उसे ले जाता है."





"ऐसी मूर्खतापूर्ण चीज़ें केवल तंबल के लिए ही उपयुक्त होगी," मुख्यमंत्री ने राजा के कान में बड़बड़ाया. "इसकी तुलना चमत्कारिक मछली से बिल्कुल नहीं की जा सकती है."

बढ़ई उदास होकर जाने की तैयारी कर रहा था तभी तंबल ने कहा, "पिताजी, कृपा मुझे वो लकड़ी का घोड़ा लेने दें."

"ठीक है," राजा ने कहा, "उसे तंबल को दे दो. हाँ, बढ़ई को ले जाकर एक पेड़ से बांध दो ताकि उसे यह पता चले कि हमारा समय कितना मूल्यवान है. उसे सोचने दो कि चमत्कारिक मछली ने हमें कितना समृद्ध बनाया है, और शायद जब वो यह सोच ले कि उसे वास्तव में क्या काम करना है, तो हम उसे अभ्यास करने के लिए जाने देंगे."

बढ़ई को ले जाया गया, और राजकुमार तंबल जादू के घोड़े को लेकर दरबार से निकल गया.





तंबल, घोड़े को अपने कमरे में ले गया, और उसने पाया कि उसमें कई घुंघरू बंधे थे, जो चतुराई से नक्काशीदार डिजाइनों में छिपे हुए थे. जब इन्हें एक निश्चित तरीके से घुमाया जाता तो घोड़ा - और उस पर चढ़ा हुआ सवार - हवा में उड़ते और घुंडी हिलाने वाले के दिमाग में जो मंज़िल होती घोड़ा उसे वहां ले जाता.

इस तरह, तंबल ने दिन-ब-दिन उन जगहों के लिए उड़ानें भरी, जहां वो पहले कभी नहीं गया था, और उसे बहुत सी नई चीजें पता चलीं. वो हर जगह घोड़े को अपने साथ लेकर जाता था.

एक दिन वो होशियार से मिला, जिसने उससे कहा, "लकड़ी का घोड़ा बस तुम्हारे लिए ही ठीक है. पर मैं सभी लोगों की भलाई के लिए काम कर रहा हूं. और वही मेरी दिली इच्छा है!"

तंबल ने सोचा, "काश मुझे पता होता कि सबका भला क्या होता है. और काश मैं अपने दिल की इच्छा को जान पाता."

जब वो अपने कमरे में था, तो वो घोड़े पर बैठ गया, और उसने घुंडी घुमा दी, और सोचा, "मैं अपने दिल की इच्छा को खोजना चाहता हूं."



प्रकाश की तुलना से भी अधिक तेजी से, घोड़ा हवा में उठा और राजकुमार को एक हजार दिन दूर एक दूर-सुदूर के राज्य में ले गया, जहाँ पर एक जादूगर-राजा का शासन था.

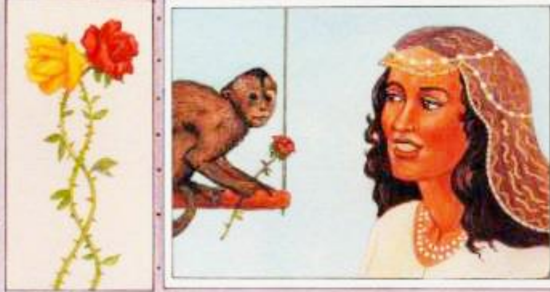


राजा, जिसका नाम कहाना था, की एक सुंदर कन्या थी, जिसका नाम प्रिंसेस पर्ल था. बेटी की रक्षा के लिए, राजा ने उसे एक महल में कैद कर दिया था, जो आकाश में घूमता रहता था, और जहाँ कोई नश्वर व्यक्ति पहुँच नहीं सकता था. जैसे-जैसे तंबल जादू की भूमि के पास आया, उसने आकाश में चमकता हुआ महल देखा, और वो वहीं उतर गया.

जब राजकुमारी उस युवा घुड़सवार से मिली तो उसे उससे प्यार हो गया.

"मेरे पिता हमें कभी शादी नहीं करने देंगे," राजकुमारी ने कहा, "क्योंकि उनकी आज्ञा है कि मुझे एक और जादूगर-राजा के बेटे से शादी करनी चाहिए जो हमारे देश के पूर्व में ठंडे रेगिस्तान में रहता है. इस शादी से मेरे पिता दोनों राज्यों को एकजुट करना चाहते हैं. और कोई भी उनकी आज्ञा को चुनौती देने की हिम्मत नहीं कर सकता है."

"मैं उसके पास जाऊंगा और उसके साथ तर्क-वितर्क करने की कोशिश करूंगा," तंबल ने जादू के घोड़े पर चढ़ते हुए कहा.



लेकिन जब वह जादू के देश में उतरा, तो वहां पर देखने के लिए इतनी सारी नई और रोमांचक चीजें थीं कि उसने महल में जाने की जल्दी नहीं की. जब वो अंत में पहुंचा, तो द्वार पर ढोल बज रहा था, जिसका मतलब था कि राजा अनुपस्थित था. तंबल ने पूछा कि राजा कब लौटेंगे.

"वो उड़ते राजमहल में अपनी बेटी से मिलने गए हैं," एक आदमी ने कहा, "और वो आमतौर पर अपनी बेटी के साथ कई घंटे बिताते हैं."

फिर तंबल एक शांत स्थान पर गया और वहां उसने घोड़े को राजा के निजी महल में ले जाने को कहा. "मैं उनके घर के पास जाऊँगा," उसने मन ही मन सोचा, "क्योंकि अगर मैं उनकी अनुमति के बिना उड़ते राजमहल में गया, तो वो क्रोधित हो सकते हैं."

राजा के घर पहुँचने के बाद वो पर्दे के पीछे छिप गया और सोने के लिए लेट गया.



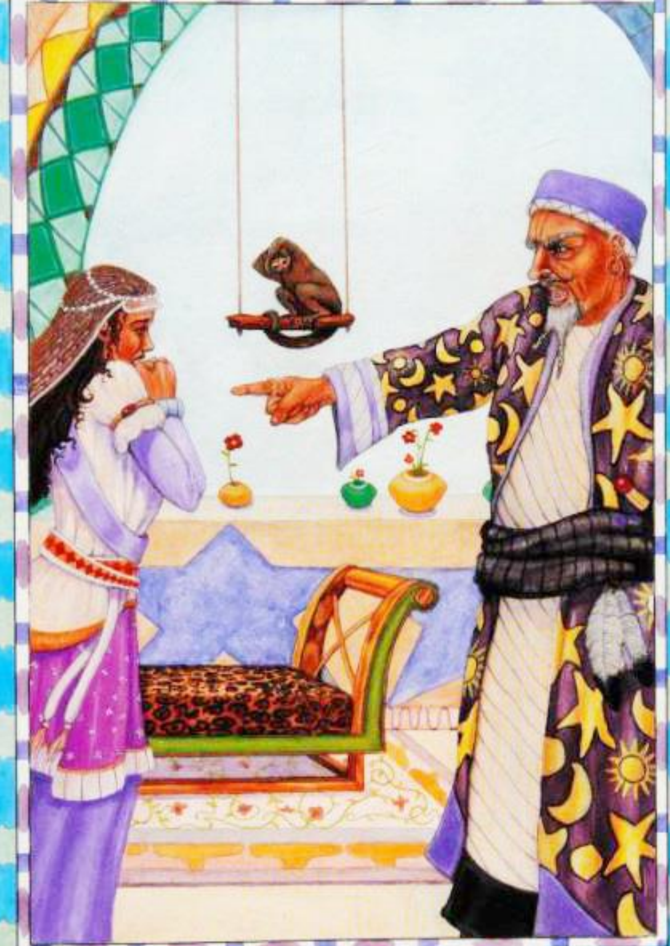
इस बीच, बात को गुप्त रखने में असमर्थ, प्रिंसेस पर्ल ने अपने पिता को बता दिया कि एक उड़ने वाले घोड़े पर एक आदमी उससे मिलने आया था और उससे शादी करना चाहता था. वो सुनकर राजा कहाना बहुत क्रोधित हुआ.

उन्होंने उड़ते राजमहल के चारों ओर दरबान लगा दिए और फिर मसले पर सोचने के लिए अपने महल में लौटे. जैसे ही उन्होंने अपने शयनकक्ष में प्रवेश किया, उसके बिना जीभ वाले जादू के नौकर ने उन्हें इशारे से कोने में पड़े लकड़ी का घोड़ा दिखाया. "आह!" जादूगर-राजा चिल्लाया. "चलो, अब वो मेरे काबू में है. अब हम देखेंगे कि क्या संभव हो सकता है."

जब राजा और उसके सेवक घोड़े की जाँच कर रहे थे, तभी राजकुमार फिसलकर महल के दूसरे हिस्से में छिप गया.

राजा ने घुंडी घुमाई, घोड़े को थपथपाया और यह समझने की कोशिश की कि यह कैसे काम करता है, लेकिन वो कुछ घबरा गया. "उस चीज़ को मुझे से दूर ले जाओ," राजा ने कहा. "अब उसका कोई उपयोग नहीं है. वो सिर्फ एक खिलौना है, और वो केवल बच्चों के लिए ही उपयुक्त है."

और फिर घोड़े को एक अलमारी में बंद कर दिया गया.



अब राजा कहाना ने सोचा कि वो बिना कोई देर किए अपनी बेटी की शादी की व्यवस्था करेगा क्योंकि हो सकता है कि घोड़े वाला राजकुमार, प्रिंसेस पर्ल को पाने की कोई और तरकीब अपनाए. इसलिए, उसने बेटी को अपने महल में बुलाया और दूसरे जादूगर-राजा को एक संदेश भेजा, जिसका बेटा प्रिंसेस पर्ल से शादी करने वाला था, वो चाहता था कि राजकुमार अपनी दुल्हन से शादी करने के लिए तुरंत आए.

इस बीच, जब गार्ड सो रहे थे तब राजकुमार तंबल महल से भाग निकला और अपने देश लौटने के लिए तैयार हुआ. अपने दिल की इच्छा की तलाश उसे अब बहुत निराशाजनक लग रही थी, लेकिन उसने खुद से कहा, "चाहें मेरा शेष जीवन इस काम में बीते पर मैं इस राज्य पर बलपूर्वक कब्ज़ा करने के लिए अपने सैनिकों के साथ वापस आऊंगा. पर उसके लिए मुझे अपने पिता को समझाना होगा. उन्हें मेरे दिल की इच्छा पूरी करने में ज़रूर मदद करनी होगी."





इतना कहकर वो चल दिया. ऐसी दुर्गम यात्रा के लिए उसकी कोई तैयारी नहीं थी. एक राहगीर, बिना किसी प्रकार की तैयारी पैदल यात्रा करते हुए, भयंकर गर्मी, ठंडी रातों और रेत के तूफान का सामना करते हुए, वो जल्द ही रेगिस्तान में खो गया.



व्याकुल, तंबल ने खुद को, अपने पिता, जादूगर-राजा, बढ़ई, यहां तक कि प्रिंसेस पर्ल और जादू के घोड़े को भी इस हश्र के लिए दोषी ठहराया. कभी उसे लगता था कि उसके आगे पानी दिख रहा है, तो कभी शहर दिखते थे. वह कभी प्रसन्नता का अनुभव करता था, कभी अतुलनीय रूप से उदास होता था.

कभी-कभी उसे लगता था कि मुश्किलों में उसके कुछ साथी हैं, लेकिन फिर वो खुद को बिल्कुल अकेला पाता था.

उसे लगा कि वो अनंत काल से यात्रा कर रहा था. अचानक, जब उसने हार मान ली तभी उसने अपने सामने कुछ देखा जो पहले एक मृगतृष्णा की तरह लग रहा था. वो स्वादिष्ट फलों से भरा एक बगीचा था जो चमक रहा था और उसे अपने करीब आने का इशारा कर रहा था.

पहले तो तंबल ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया और चलना जारी रखा, लेकिन जल्द ही उसे एहसास हुआ कि वाकई में एक ऐसे बगीचे के पास से गुजर रहा था.

उसने कुछ फलों को इकट्ठा किया और उनका स्वाद चखा. वे स्वादिष्ट थे. उन फलों ने उसका भय और साथ ही उसकी भूख-प्यास को भी दूर कर दिया. जब उसका पेट भर गया, तो वह एक विशाल, पेड़ की छाया में लेट गया और सो गया.

जब वो उठा, तो उसे काफी अच्छा लगा, लेकिन कुछ गलत भी लग रहा था. पास के एक ताल में उसने पानी में अपना प्रतिबिंब देखा. अब उसका चेहरा एक बुरे सपने जैसा था? उसने खुद को नोचा, और थपथपाया और खुद को जगाने की कोशिश की. लेकिन उससे कोई काम नहीं बना. उसने भय के साथ, चीखते-चिल्लाते हुए, खुद को जमीन पर फेंक दिया. "चाहे मैं जीवित रहूं या मर जाऊं," उसने सोचा, "इन फलों ने मुझे बर्बाद किया है. अब सबसे बड़ी सेना भी, विजय मेरी मदद नहीं कर पाएगी. अब मुझसे कोई शादी भी नहीं करेगा, खासकर प्रिंसेस पर्ल, तो बिल्कुल नहीं. जानवर भी मुझे देखकर डरेंगे और मेरे मन की अभिलाषा निश्चय ही मुझे ठुकरा देगी!" और फिर वो अपना होश खो बैठा.



जब उसकी आँख खुली तो अंधेरे में, उसने देखा कि प्रकाश की एक किरण खामोश पेड़ों के बीच से आ रही थी. उसके अंदर डर और आशा ने संघर्ष किया. जैसे ही प्रकाश करीब आया, उसने देखा कि वो एक चमकदार तारे जैसी आकृति में घिरा हुआ एक दीपक था. दीपक को एक दाढ़ी वाला आदमी पकड़े था और उसके चारों ओर दीपक का प्रकाश फैला था.



"मेरे बेटे," आदमी ने तंबल से कहा, "तुम पर इस जगह का असर हुआ है. अगर मैं नहीं आया होता, तो तुम इस मंत्रमुग्ध करने वाले उपवन के एक जानवर बन जाते, क्योंकि यहाँ पर तुम्हारे जैसे और अनेकों प्राणी हैं. लेकिन मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं."

तंबल ने सोचा कि कहीं वो आदमी भेष में उन बुरे पेड़ों का मालिक तो नहीं था. लेकिन, जैसे ही उसे होश वापस आया, उसने महसूस किया कि अब उसके पास खोने के लिए कुछ बाकी नहीं बचा था.

"मेरी मदद करें, महाराज," तंबल ने कहा.

"यदि तुम सच में अपने दिल की इच्छा चाहते हो," बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, "तो तुम केवल उस इच्छा को अपने दिमाग में दृढ़ता से रखना, और ताजे, स्वादिष्ट फलों आदि के बारे में नहीं सोचना. फिर तुम उन सूखे मेवों को खाना जो इन सब वृक्षों के नीचे पड़े हैं. उसके बाद अपने भाग्य का अनुसरण करना."

इतना कहकर वो आदमी चला गया.

जैसे ही उस आदमी का प्रकाश अंधेरे में गायब हुआ, तंबल ने चंद्रमा को उगते देखा, और उसकी हल्की रोशनी में उसने देखा कि सच में हर पेड़ के नीचे सूखे मेवों के ढेर थे.

उसने कुछ मेवे इकट्ठे किए और जितनी जल्दी हो सका उन्हें खा लिया.

धीरे-धीरे उसके हाथों और बाजुओं से फर गायब हो गया. सींग सिकुड़ गए, फिर गायब हो गए. उसकी दाढ़ी गिर गई. और वो फिर से खुद तंबल बन गया.

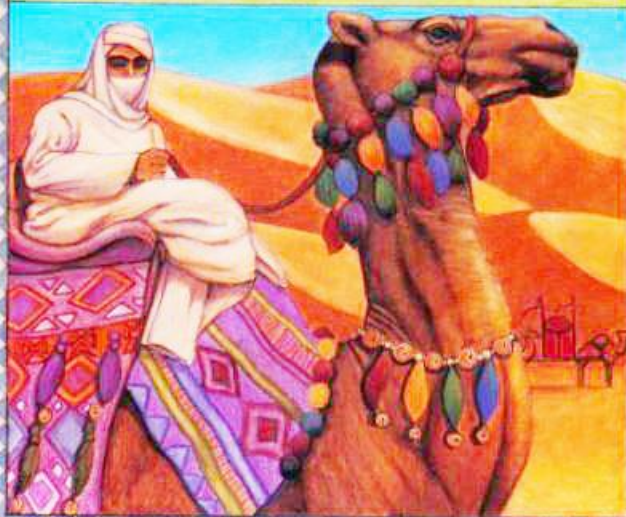


जब प्रकाश की पहली किरण आई और भोर हुई तो उसने ऊँटों की घंटियों की आवाज़ सुनी. मुग्ध वन से होकर एक भव्य शोभायात्रा आ रही थी.

जब तंबल वहाँ खड़ा था, तो दो सवार, लोगों और जानवरों की लाइन से दूर हटकर उसके पास सरपट दौड़ पड़े.

एक अधिकारी ने कहा, "राजकुमार के नाम पर, हम आपके कुछ फल मांगते हैं. उनकी दिव्य महिमा प्यासी है और उन्होंने इनमें से कुछ अजीब खुबानियों की इच्छा ज़ाहिर की है."

तंबल नहीं हिला. वो अपने हाल के अनुभवों से बिल्कुल सुन्न हो गया था.



अब राजकुमार अपनी गाड़ी से नीचे आया और कहा, "मैं पूर्व के जादूगर-राजा का पुत्र जदुगरज़ादा हूं. यह लो सोने का एक थैला. मुझे तुम्हारे कुछ फल पाने की इच्छा है क्योंकि मैं अपनी दुल्हन के पास जाने की जल्दी में हूं. पश्चिम के जादूगर-राजा काहाना की बेटी प्रिंसेस पर्ल के पास."

इन शब्दों को सुनकर तंबल का दिल हिल गया. लेकिन उसने यह महसूस किया कि यही वो नियति है जिसका पालन करने के लिए बूढ़े आदमी ने उससे कहा था. उसने राजकुमार को उतने फल दिए जितने वो खा सकता था.

राजकुमार फल खाने के बाद वहीं सो गया. जैसे ही उसने ऐसा किया, उसके सींग, फर और विशाल कान निकलने लगे. जब सिपाहियों ने उसे हिलाया तो राजकुमार अजीब व्यवहार करने लगा. राजकुमार ने दावा किया कि वो सामान्य था, और उसके सैनिक विकृत थे.

लोगों ने राजकुमार को रोका और जल्दबाजी में आपस में सलाह-मशविरा किया. तंबल ने दावा किया कि अगर राजकुमार सोता नहीं तो सब कुछ ठीक होता. अंत में, तंबल को गाड़ी में बैठाने और उसे राजकुमार की भूमिका निभाने का फैसला किया गया. सींग वाले जदुगरजादे को एक घोड़े से बांध दिया गया, उसे एक बुरका पहनाया गया, जिससे वो एक महिला दासी दिखे.

सलाहकारों ने कहा, "हो सकता है कि अंत में उसकी बुद्धि ठीक हो जाए. वैसे वो अभी भी हमारा ही राजकुमार है. तंबल ही राजकुमारी से शादी करेगा. फिर, जितनी जल्दी हो सकेगा हम उन सभी को अपने देश में वापस ले जाएंगे जहाँ हमारा राजा समस्या को हल करेगा."

तंबल, अपने भाग्य का अनुसरण करते हुए, उसमें शामिल होने के लिए सहमत हो गया.

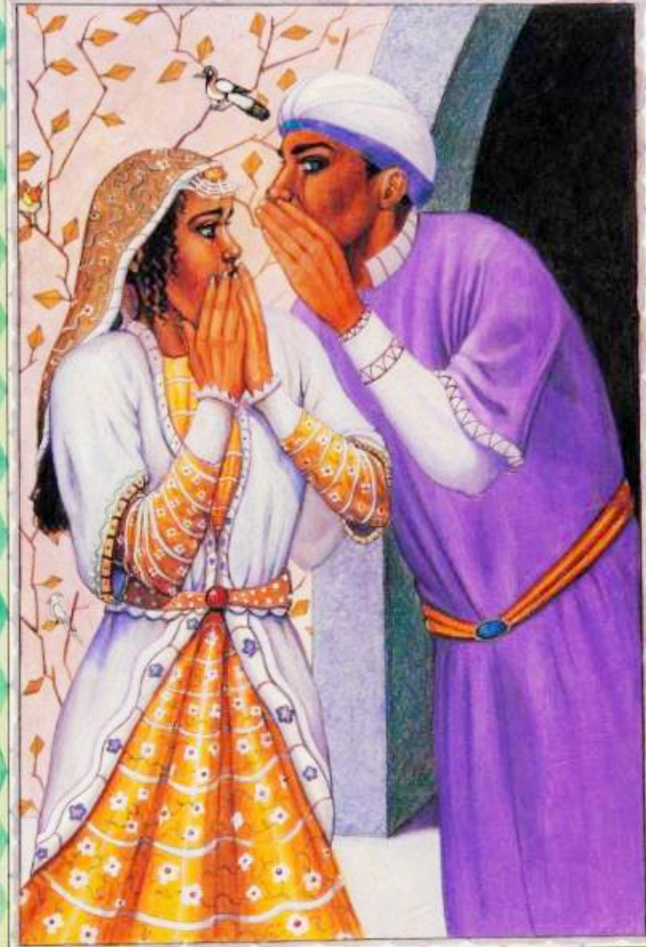


जब पार्टी पश्चिम की राजधानी में पहुंची, तो राजा स्वयं उनसे मिलने के लिए बाहर आया. तंबल को राजकुमारी के दूल्हे के रूप में ले जाया गया. प्रिंसेस पर्ल उसे देख इतनी चकित हुई कि वो लगभग बेहोश हो गई लेकिन तंबल ने जल्दी से फुसफुसाकर उसे सब कुछ बता दिया. और इस तरह उनका विवाह हुआ, और लोगों ने एक महान उत्सव मनाया.

इस बीच, सींग वाले राजकुमार की बुद्धि वापिस आ गई लेकिन उसका मानवीय रूप अभी वापिस नहीं आया था. और उसके अनुरक्षक ने अभी भी बुरके में ही रखा था. जैसे ही दावत समाप्त हुई, सींग वाले राजकुमार की पार्टी के मुख्यमंत्री (जो तंबल और राजकुमारी को बहुत करीब से देख रहा था) ने कहा, "हे न्यायप्रिय और गौरवशाली राजा, ज्ञान के फव्वारे, अब समय आ गया है, हमारे ज्योतिषियों की घोषणाओं के अनुसार, दूल्हा-दुल्हन जोड़े को वापस हमारे देश में ले जाने का, ताकि वे अपने नए घर में स्थापित हो सकें."

राजकुमारी खतरे की इस घड़ी में तंबल की ओर मुड़ी, क्योंकि वो जानती थी कि जैसे ही वे खुली सड़क पर होंगे, जादूगरजादा उस पर दावा करेगा और तंबल का अंत कर देगा.

तंबल ने फुसफुसाते हुए कहा, "किसी भी बात से मत डरो. हमें अपने भाग्य का अनुसरण करते हुए जितना बन सके उतना अच्छा कार्य करना चाहिए. तुम जाने की सहमत दे दो, लेकिन इतना कहो कि तुम लकड़ी के घोड़े के बिना यात्रा नहीं करोगी."



पहले तो जादूगर-राजा अपनी बेटी की इस इच्छा से नाराज़ हुए. उन्होंने महसूस किया कि वो घोड़ा इसलिए चाहती होगी क्योंकि वो उसके पहले प्रेमी के साथ जुड़ा हुआ था. लेकिन सींग वाले राजकुमार के मुख्यमंत्री ने कहा, "महामहिम, एक खिलौने की इच्छा किसी भी युवा लड़की को हो सकती है. आप उसे वो खिलौना अपने साथ ले जाने दें ताकि हम जल्दी से घर की ओर कूच कर सकें."



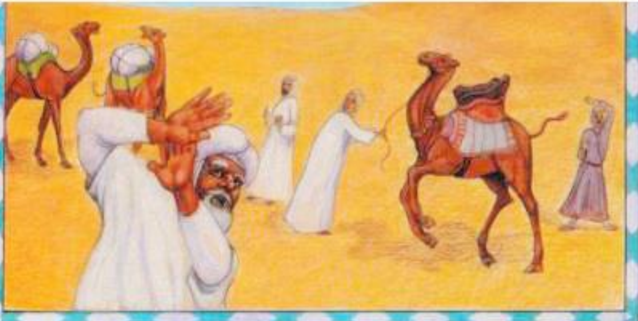
फिर जादूगर-राजा सहमत हो गया, और जल्द ही शानदार जुलूस अपने रास्ते पर था. राजा के सुरक्षा गार्डों के वापस जाने के बाद, और रात के लिए रुकने से पहले, घृणित जदुगरज़ादे ने अपना बुरका फेंक दिया और उसने तंबल को पुकारा. "तुम ही मेरे दुखी दुर्भाग्य के रचयिता हो! मैं तुम्हारे हाथ-पैर बांध दूंगा और तुम्हें अपने देश वापस ले जाऊंगा. तुम्हें मुझे इस जादू से निकालने का तरीका बताना ही होगा नहीं तो मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोडूंगा. अब, मुझे प्रिंसेस पर्ल वापिस कर दो!"





तंबल, प्रिंसेस पर्ल के पास दौड़ा हुआ गया और चकित पार्टी के सामने, अपने लकड़ी के घोड़े पर सवार होकर आसमान में उड़ गया. उसके पीछे प्रिंसेस पर्ल बैठी हुई थीं.

कुछ ही मिनटों में दूल्हा-दुल्हन राजा मुमकिन के महल में उतरे. उनके साथ जो कुछ हुआ था, वो उन्होंने राजा को बताया. राजा उनकी सुरक्षित वापसी पर खुशी से झूम उठा. राजा ने तुरंत बढ़ई को जेल से रिहा किया उसे पुरस्कृत किया और सभी नागरिकों को उसकी सराहना करने का आदेश दिया.



जब राजा मुमकिन का देहांत हुआ तब राजकुमारी पर्ल और राजकुमार तंबल उनके उत्तराधिकारी बने. राजकुमार होशियार भी प्रसन्न था, क्योंकि वो अभी भी चमत्कारिक मछली से मोहित था.

"मैं आपके लिए खुश हूं, अगर आप खुश हैं," राजकुमार होशियार ने अपने भाई से कहा, "लेकिन मुझे लगता है कि उन चमत्कारिक मछलियों से ज्यादा लोगों को फायदा नहीं हुआ है."





और फिर यह कहानी उस देश के लोगों के बीच एक मूल कहावत बन गई, हालांकि फिर लोग उसकी शुरुआत को भूल गए. कहावत है: "जो लोग मछली चाहते हैं वे मछली के ज़रिए बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं, और जो अपने दिल की इच्छा नहीं जानते हैं उन्हें पहले लकड़ी के घोड़े की कहानी सुननी चाहिए."



समाप्त